हिन्दी

(स्पर्श)(पाठ 8)(स्वामी आनंद – शुक्रतारे के समान)
(कक्षा 9)

प्रश्न अभ्यास

खंड – क

प्रश्न 1:

गांधीजी ने महादेव को अपना वारिस कब कहा था?

उत्तर 1:

गॉंधीजी को महादेव अपने पुत्र से भी अधिक प्रिय थे । जब सन् 1917 में वे गांधीजी के पास पहुँचे थे, तभी गांधीजी ने उनको तत्काल पहचान लिया और उनको अपने उत्तराधिकारी का पद सौंप दिया। सन् 1919 में जलियाँवाला बाग हत्याकांड के दिनों में पंजाब जाते हुए गांधीजी को पलवल स्टेशन पर गिरफ्तार किया गया था। उसी समय गांधीजी ने महादेव भाई को अपना वारिस कहा था।

प्रश्न 2:

गांधीजी से मिलने आनेवालों के लिए महादेव भाई क्या करते थे ?

उत्तर 2:

अंग्रजों से पीड़ित दल के दल जब गॉंधीजी से मिलने आते थे तब महादेव उनकी बातों की संक्षिप्त टिप्पणियॉं तैयार करके गॉंधीजी के सामने रख देते थे और आने वालों के साथ उनकी रूबरू मुलाकातें भी करवाते थे।

प्रश्न 3:

महादेव भाई की साहित्यिक देन क्या है?

उत्तर 3:

साहित्य और संस्कार के साथ इसका कोई संबंध नहीं रहा था । लेकिन महादेव जी ने उसी समय से टैगोर, शरदचंद्र आदि के साहित्य को उलटना–पुलटना शुरू कर दिया था। 'चित्रांगदा' कच–देवयानी की कथा पर टैगोर द्वारा रचित 'विदाई का अभिशाप' शीर्षक नाटिका, 'शरद बाबू की कहानियाँ' आदि अनुवाद उस समय की उनकी साहित्यिक गतिविधियों की देन हैं।

प्रश्न 4:

महादेव भाई की अकाल मृत्यु का कारण क्या था?

उत्तर 4:

महादेव मगनवाड़ी से वर्धा की असह्य गरमी में रोज सुबह पैदल चलकर सेवाग्राम पहुँचते थे। जाते–आते पूरे 11 मील चलते थे। कुल मिलाकर इसका जो प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, वही 76 वर्ष में उनकी अकाल मृत्यु का करण बना

प्रश्न 5:

महादेव भाई के लिखे नोट के विषय में गांधीजी क्या कहते थे ?

उत्तर 5:

बड़े–बड़े देशी–विदेशी राजपुरुष, राजनीतिज्ञ, गांधीजी से मिलने आते थे महादेव एक कोने में बैठे–बैठे अपनी लंबी लिखावट में सारी चर्चा को लिखते रहते थे। मुलाकात के लिए आए हुए लोग जब सारी बातचीत को टाइप करके उसे गांधीजी के पास 'ओके' करवाने के लिए पहुँचते –तब गांधीजी कहते : महादेव के लिखे 'नोट' के साथ थोड़ा मिलान कर लेना था न।

खंड – ख

प्रश्न 1:

पंजाब में फौजी शासन ने क्या कहर बरसाया ?

उत्तर 1:

जब 1919 में पंजाब के जलियॅावाला बाग में एक आम–सभा में अंग्रेजों के जनरल डायर ने निहत्थी जनसभा पर गोलियॉ बरसाना शुरू कर दिया तो इसमें बूढ़े , बच्चे ,आदमी औरतें सभी मारे गए । यह अंग्रेजों का अब तक को सबसें बड़ा हत्याकाण्ड था जिसकी पूरे भारत में निन्दा की गई । पजाब के कई नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया और कइयों को काला पानी की सजा दे दी गई ।

प्रश्न 2:

महादेव जी के किन गुणों ने उन्हें सबका लाड़ला बना दिया था ?

उत्तर 2:

बेजोड़ कॉलम, भरपूर चौकसाई, उॅचे–से–उँचे ब्रिटिश समाचार–पत्रों की परंपराओं को अपनाकर चलने का गांधीजी का आग्रह और कट्टर से कट्टर विरोधियों के साथ भी पूरी सत्यनिष्ठा से उत्पन्न होने वाली विनय–विवेक–युक्त विवाद करने की गांधीजी की तालीम इन सब गुणों ने तीव्र मतभेदों और विरोधी प्रचार के बीच भी देश–विदेश के सारे समाचार–पत्रों की दुनिया में और एंग्लो–इंडियन समाचार–पत्रों के बीच भी व्यक्तिगत रूप से महादेव को सबका लाड़ला बना दिया था।

प्रश्न 3:

महादेव जी की लिखावट की क्या विशेषताएँ थी ?

उत्तर 3:

भारत में महादेव जी के अक्षरों का कोई सानी नहीं था। वाइसराय के नाम जाने वाले गांधीजी के पत्र हमेशा महादेव की लिखावट में जाते थे। उन्हें भी गांधीजी के सेक्रेटरी के समान खुशनवीश ;सुंदर अक्षर लिखने वाला लेखक नसीब नहीं था ? बड़े–बड़े सिविलियन और गवर्नर कहा करते थे कि सारी ब्रिटिश सर्विसों में महादेव के समान अक्षर लिखने वाला कहीं खोजने पर भी नही मिलता था ।.

आशय स्पष्ट कीजिए:

1.

'अपना परिचय उनके पीर–बावर्ची–भिश्ती–खर' के रूप में देने में वे गौरवान्वित महसूस करते थे।'

उत्तर 1:

गांधीजी के लिए सेवाधर्म का पालन करने इस धरती पर महादेव देसाई गांधीजी के मंत्री थे। वे अपने मित्रों के बीच विनोद में अपने को गांधीजी का 'हम्माल' कहने में और कभी–कभी अपना परिचय उनके 'पीर–बावर्ची–भिश्ती–खर' के रूप में देने में वे गौरव का अनुभव किया करते थे। क्योंकि गांधीजी उनके आदर्श और संरक्षक थे

2.

इस पेशे में आमतौर पर स्याह को सफेद और सफेद को स्याह करना होता था।

उत्तर 2:

महादेव ने वकालत पढ़ी थी जो उनके मिजाज के हिसाब से ठीक नहीं थी क्योंकि इस पेशे में सही को गलत और गलत को सही ठहराना होता था जो महादेव जी के लिए एक मुश्किल काम था ।

3.

देश और दुनिया को मुग्ध करके वे शुक्रतारे की तरह ही अचानक अस्त हो गए।

उत्तर 3:

शुक्रतारा आसमान में थेड़ी देर के लिए ही नजर आता है लेकिन सबसे अलग दिखाई पड़ता है । वैसे ही महादेव जी भी कुछ समय ही गांधीजी के साथ रहे मगर उनके साथ अपने को आसमान में उगे शुक्रतारे के समान चमका कर चले गए ।

4.

उन पत्रों को देख–देखकर दिल्ली और शिमला में बैठे वाइसराय लंबी साँस–उसाँस लेते रहते थे।।

उत्तर 4:

महादेव जी के द्वारा लिखे गए पत्र जब वाइसराय के पास पहुॅचते थे तो उसकी लिखावट और बनावट देखकर वाइसराय को यह समझ में नहीं आता था कि इनका क्या उत्तर दिया जाए और किस प्रकार दिया जाए। कहीं सटीक जवाब नहीं दिया गया तो तो अगला पत्र और ज्यादा मुसीबत भरा हो सकता है ।